

विचार बिन्दु

त्याग यह नहीं कि मोटे और खुरदरे वस्त्र पहन लिए जायें और सूखी रोटी खायी जाये, त्याग तो यह है कि अपनी इच्छा अभिलाषा और तृष्णा को जीता जाये। -सुफियान सौरी

तापमान में बढ़ोतरी का दिखने लगा है खेती किसानों पर नकारात्मक असर

जलवायु परिवर्तन का असर खेती किसानों पर साफ दिखाई देने लगा है। कहा जा रहा था कि 2024 की फरवरी सर्वाधिक गर्मी वाला माह रहा है पर 2025 में जनवरी में जिस तरह से तापमान में बढ़ोतरी देखी गई है और फरवरी में ही देश के अधिकांश हिस्सों खासकर उत्तरी भारत में तापमान में लगातार तेजी देखी जा रही है वह चिंतनीय होती जा रही है। दिल्ली, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, गुजरात, राजस्थान सहित अनेक प्रदेशों में फरवरी में अधिकतम तापमान का आंकड़ा 30 डिग्री को छूने को बेताब हो रहा है। देश के कई हिस्सों में दिन का तापमान 29 डिग्री को पार कर रहा है। यह कोई हमारे देश के ही हालात नहीं है अपितु दुनिया के अधिकांश देशों में जलवायु परिवर्तन का असर साफ-साफ दिखाई देने लगा है। बढ़ता तापमान बुरी तरह से प्रभावित कर रहा है। बढ़ते तापमान के कारण परिस्थिति तंत्र प्रभावित हो रहा है। बीमारियों तो फैल ही रही है संपूर्ण तंत्र पर ही नकारात्मक प्रभाव पड़ता जा रहा है। चिंतनीय यह है कि एक ओर हम निरंतर घटते भूजल स्तर से प्रभावित हो रहे हैं तो ग्लेसियरों के तेजी से पिघलने का असर दिखाई दे रहा है। असमय अतिवृष्टि, अनावृष्टि, तूफान, जंगलों में आग आदि आदि सीधा असर दिखाई दे रहा है।

जहां तक खेती-किसानी का प्रश्न है मौसम के अप्रत्याशित बदलाव से फसल चक्र पर नकारात्मक असर दिखने लगा है। फसल वपन का एक सिस्टम होता है। बुआई से लेकर फसल के पक कर तैयार होने का चक्र होता है। दर असल हो यह रहा है कि जिस समय फसल में फल फूल आने का समय होता है उस समय तापमान बढ़ने से फल फूल का विकास रुक जाता है और फसल पकने लगती है, इससे फसल में खराब और उत्पादन में कमी होना स्वाभाविक हो जाता है। दिसंबर, जनवरी की सर्दी और फरवरी में औसत तापमान से फसलों का सही ढंग से विकास संभव हो पाता है। एक अन्य चिंतनीय कारण यह भी बनता जा रहा है कि मावठ के समय मावठ नहीं होती, सर्दियों की बरसात के समय बरसात नहीं होती और जिस समय तापमान में बढ़ोतरी होती चाहिए उस समय आंधी, तूफान और बरसात आकर फसल को चौपट करने में कोई कमी नहीं छोड़ती। इसका सीधा-सीधा असर खाद्यान्न संकट के रूप में देखा जा सकता है। प्रायः देखा जाने लगा है कि जब फसल की कटाई का समय होता है उस समय आंधी-तूफान या ओला-बरसात होकर फसल को चौपट करने में कमी नहीं छोड़ती। इसी तरह से जनवरी-फरवरी में जब तापमान में गिरावट की आवश्यकता होती है उस समय तापमान में बढ़ोतरी चिंता का विषय बनता जा रहा है। विशेषज्ञों का कहना है कि यदि जलवायु परिवर्तन के हालात यही रहे तो कुछ खाद्य वस्तुओं के भावों में कई गुणा तक बढ़ोतरी देखने को मिलेगी। आलू, टमाटर, दालों, तिलहन और अनाज के भावों में बढ़ोतरी साफ तौर से देखी जा सकती है।

कृषि और आर्थिक क्षेत्र के विशेषज्ञों का मानना है कि तापमान की असाधारण उतार-चढ़ाव के चलते कृषि पैदावार पर सीधा-सीधा नकारात्मक असर पड़ रहा है। कृषि उत्पादन प्रभावित हो रहा है। कृषि उत्पादों की गुणवत्ता प्रभावित हो रही है। इससे साफ हो जाता है कि खाद्य वस्तुओं के भाव बढ़ेंगे ही और उसका सीध असर हमें महंगाई के रूप में देखने को मिलेगा। मजे की बात यह है कि जलवायु परिवर्तन के कारण दुनिया के देशों में तेजी से बंजर होती भूमि को लेकर चिंता तो जलाई जा रही है पर अभी तक इन हालातों से निपटने का ठोस आधा तैयार नहीं किया जा सका है। आज दुनिया के देश आसन खाद्यान्न संकट को लेकर चिंतित है। इसके लिए बड़े-बड़े सम्मेलनों में चिंतन-मनन हो रहा है। विश्व खाद्य संगठन सहित दुनिया की संस्थाएँ इससे आसन संकट को लेकर तो परेशान है ही उनकी चिंता का कारण यह भी होता जा रहा है कि पोषक भोजन नहीं मिलने से करोड़ों लोग कुपोषण के शिकार हैं। खाद्यान्न का उत्पादन प्रभावित हो रहा है। गुणवत्ता प्रभावित हो रही है। दुनिया के देश खेती किसानों के महत्व को कोरना काल में अच्छी तरह से समझ चुके हैं। कोरना में मानवता को संभल देने में खेती किसानों ने प्रमुख भूमिका निभाई और सबकुछ बंद होने पर खेती किसानों ही लोगों का पेट भरने में सहायक रही।

जलवायु परिवर्तन का असर जब साफ-साफ सामने आने लगा है तो उस हालात में मौसम विज्ञानियों और कृषि विज्ञानियों के सामने बड़ी चुनौती आ गई है। एक ओर जलवायु परिवर्तन को सर्वाधिक प्रभावित करने वाले कारकों का कोई ना कोई विकल्प खोजना ही होगा। होता यह है कि हम जिसे आज बेहतर विकल्प बताते हैं कुछ समय बाद ही उसमें भी खामियां नजर आने लगती हैं। जलवायु को नियंत्रित करने वाले जंगलों का स्थान कंक्रीट के जंगल लेते जा रहे हैं। इसमें कोई दो राय नहीं कि इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों व नई-नई खोजों ने हमारा जीवन आसान बनाया है पर उसके साइड इफेक्ट तेजी से असर दिखाने लगे हैं। रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग ने भूमि को उर्वर शक्ति को प्रभावित किया है। अत्यधिक जल दोहन से भूजल का स्तर साल दर साल नीचे जाता जा रहा है। भू क्षरण होने लगा है। भूमि तेजी से बंजर होती जा रही है।

खैर हालात हमारे सामने हैं। कृषि विज्ञानियों को ऐसी किस्में विकसित करनी होंगी जो बदलते मौसम के अनुकूल हों। शुष्क भूमि में खेती की किस्में खोजनी होंगी। इसी तरह से कम जल में विकसित होने वाली फसलों की किस्में पर ध्यान देना होगा। कंजरवेशन खेती को बढ़ावा देना होगा। परंपरागत खेती को चरणवद्ध तरीके से अपनाया जाएगा। प्रायः यह करना होगा कि जलवायु परिवर्तन के कारण हो रहे मौसम चक्र के बदलाव के अनुकूल फसलों की किस्में तैयार हों। कृषि और आर्थिक क्षेत्र के विशेषज्ञों का मानना है कि तापमान की असाधारण उतार-चढ़ाव के चलते कृषि पैदावार पर सीधा-सीधा नकारात्मक असर पड़ रहा है। कृषि उत्पादन प्रभावित हो रहा है। कृषि उत्पादों की गुणवत्ता प्रभावित हो रही है। इससे साफ हो जाता है कि खाद्य वस्तुओं के भाव बढ़ेंगे ही और उसका सीध असर हमें महंगाई के रूप में देखने को मिलेगा। मजे की बात यह है कि जलवायु परिवर्तन के कारण दुनिया के देशों में तेजी से बंजर होती भूमि को लेकर चिंता तो जलाई जा रही है पर अभी तक इन हालातों से निपटने का ठोस आधा तैयार नहीं किया जा सका है। आज दुनिया के देश आसन खाद्यान्न संकट को लेकर चिंतित है। इसके लिए बड़े-बड़े सम्मेलनों में चिंतन-मनन हो रहा है। विश्व खाद्य संगठन सहित दुनिया की संस्थाएँ इससे आसन संकट को लेकर तो परेशान है ही उनकी चिंता का कारण यह भी होता जा रहा है कि पोषक भोजन नहीं मिलने से करोड़ों लोग कुपोषण के शिकार हैं। खाद्यान्न का उत्पादन प्रभावित हो रहा है। गुणवत्ता प्रभावित हो रही है। दुनिया के देश खेती किसानों के महत्व को कोरना काल में अच्छी तरह से समझ चुके हैं। कोरना में मानवता को संभल देने में खेती किसानों ने प्रमुख भूमिका निभाई और सबकुछ बंद होने पर खेती किसानों ही लोगों का पेट भरने में सहायक रही।

जलवायु परिवर्तन का असर जब साफ-साफ सामने आने लगा है तो उस हालात में मौसम विज्ञानियों और कृषि विज्ञानियों के सामने बड़ी चुनौती आ गई है। एक ओर जलवायु परिवर्तन को सर्वाधिक प्रभावित करने वाले कारकों का कोई ना कोई विकल्प खोजना ही होगा। होता यह है कि हम जिसे आज बेहतर विकल्प बताते हैं कुछ समय बाद ही उसमें भी खामियां नजर आने लगती हैं। जलवायु को नियंत्रित करने वाले जंगलों का स्थान कंक्रीट के जंगल लेते जा रहे हैं। इसमें कोई दो राय नहीं कि इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों व नई-नई खोजों ने हमारा जीवन आसान बनाया है पर उसके साइड इफेक्ट तेजी से असर दिखाने लगे हैं। रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग ने भूमि को उर्वर शक्ति को प्रभावित किया है। अत्यधिक जल दोहन से भूजल का स्तर साल दर साल नीचे जाता जा रहा है। भू क्षरण होने लगा है। भूमि तेजी से बंजर होती जा रही है।

खैर हालात हमारे सामने हैं। कृषि विज्ञानियों को ऐसी किस्में विकसित करनी होंगी जो बदलते मौसम के अनुकूल हों। शुष्क भूमि में खेती की किस्में खोजनी होंगी। इसी तरह से कम जल में विकसित होने वाली फसलों की किस्में पर ध्यान देना होगा। कंजरवेशन खेती को बढ़ावा देना होगा। परंपरागत खेती को चरणवद्ध तरीके से अपनाया जाएगा। प्रायः यह करना होगा कि जलवायु परिवर्तन के कारण हो रहे मौसम चक्र के बदलाव के अनुकूल फसलों की किस्में तैयार हों। कृषि और आर्थिक क्षेत्र के विशेषज्ञों का मानना है कि तापमान की असाधारण उतार-चढ़ाव के चलते कृषि पैदावार पर सीधा-सीधा नकारात्मक असर पड़ रहा है। कृषि उत्पादन प्रभावित हो रहा है। कृषि उत्पादों की गुणवत्ता प्रभावित हो रही है। इससे साफ हो जाता है कि खाद्य वस्तुओं के भाव बढ़ेंगे ही और उसका सीध असर हमें महंगाई के रूप में देखने को मिलेगा। मजे की बात यह है कि जलवायु परिवर्तन के कारण दुनिया के देशों में तेजी से बंजर होती भूमि को लेकर चिंता तो जलाई जा रही है पर अभी तक इन हालातों से निपटने का ठोस आधा तैयार नहीं किया जा सका है। आज दुनिया के देश आसन खाद्यान्न संकट को लेकर चिंतित है। इसके लिए बड़े-बड़े सम्मेलनों में चिंतन-मनन हो रहा है। विश्व खाद्य संगठन सहित दुनिया की संस्थाएँ इससे आसन संकट को लेकर तो परेशान है ही उनकी चिंता का कारण यह भी होता जा रहा है कि पोषक भोजन नहीं मिलने से करोड़ों लोग कुपोषण के शिकार हैं। खाद्यान्न का उत्पादन प्रभावित हो रहा है। गुणवत्ता प्रभावित हो रही है। दुनिया के देश खेती किसानों के महत्व को कोरना काल में अच्छी तरह से समझ चुके हैं। कोरना में मानवता को संभल देने में खेती किसानों ने प्रमुख भूमिका निभाई और सबकुछ बंद होने पर खेती किसानों ही लोगों का पेट भरने में सहायक रही।

जलवायु परिवर्तन का असर जब साफ-साफ सामने आने लगा है तो उस हालात में मौसम विज्ञानियों और कृषि विज्ञानियों के सामने बड़ी चुनौती आ गई है। एक ओर जलवायु परिवर्तन को सर्वाधिक प्रभावित करने वाले कारकों का कोई ना कोई विकल्प खोजना ही होगा। होता यह है कि हम जिसे आज बेहतर विकल्प बताते हैं कुछ समय बाद ही उसमें भी खामियां नजर आने लगती हैं। जलवायु को नियंत्रित करने वाले जंगलों का स्थान कंक्रीट के जंगल लेते जा रहे हैं। इसमें कोई दो राय नहीं कि इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों व नई-नई खोजों ने हमारा जीवन आसान बनाया है पर उसके साइड इफेक्ट तेजी से असर दिखाने लगे हैं। रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग ने भूमि को उर्वर शक्ति को प्रभावित किया है। अत्यधिक जल दोहन से भूजल का स्तर साल दर साल नीचे जाता जा रहा है। भू क्षरण होने लगा है। भूमि तेजी से बंजर होती जा रही है।

खैर हालात हमारे सामने हैं। कृषि विज्ञानियों को ऐसी किस्में विकसित करनी होंगी जो बदलते मौसम के अनुकूल हों। शुष्क भूमि में खेती की किस्में खोजनी होंगी। इसी तरह से कम जल में विकसित होने वाली फसलों की किस्में पर ध्यान देना होगा। कंजरवेशन खेती को बढ़ावा देना होगा। परंपरागत खेती को चरणवद्ध तरीके से अपनाया जाएगा। प्रायः यह करना होगा कि जलवायु परिवर्तन के कारण हो रहे मौसम चक्र के बदलाव के अनुकूल फसलों की किस्में तैयार हों। कृषि और आर्थिक क्षेत्र के विशेषज्ञों का मानना है कि तापमान की असाधारण उतार-चढ़ाव के चलते कृषि पैदावार पर सीधा-सीधा नकारात्मक असर पड़ रहा है। कृषि उत्पादन प्रभावित हो रहा है। कृषि उत्पादों की गुणवत्ता प्रभावित हो रही है। इससे साफ हो जाता है कि खाद्य वस्तुओं के भाव बढ़ेंगे ही और उसका सीध असर हमें महंगाई के रूप में देखने को मिलेगा। मजे की बात यह है कि जलवायु परिवर्तन के कारण दुनिया के देशों में तेजी से बंजर होती भूमि को लेकर चिंता तो जलाई जा रही है पर अभी तक इन हालातों से निपटने का ठोस आधा तैयार नहीं किया जा सका है। आज दुनिया के देश आसन खाद्यान्न संकट को लेकर चिंतित है। इसके लिए बड़े-बड़े सम्मेलनों में चिंतन-मनन हो रहा है। विश्व खाद्य संगठन सहित दुनिया की संस्थाएँ इससे आसन संकट को लेकर तो परेशान है ही उनकी चिंता का कारण यह भी होता जा रहा है कि पोषक भोजन नहीं मिलने से करोड़ों लोग कुपोषण के शिकार हैं। खाद्यान्न का उत्पादन प्रभावित हो रहा है। गुणवत्ता प्रभावित हो रही है। दुनिया के देश खेती किसानों के महत्व को कोरना काल में अच्छी तरह से समझ चुके हैं। कोरना में मानवता को संभल देने में खेती किसानों ने प्रमुख भूमिका निभाई और सबकुछ बंद होने पर खेती किसानों ही लोगों का पेट भरने में सहायक रही।

जलवायु परिवर्तन का असर जब साफ-साफ सामने आने लगा है तो उस हालात में मौसम विज्ञानियों और कृषि विज्ञानियों के सामने बड़ी चुनौती आ गई है। एक ओर जलवायु परिवर्तन को सर्वाधिक प्रभावित करने वाले कारकों का कोई ना कोई विकल्प खोजना ही होगा। होता यह है कि हम जिसे आज बेहतर विकल्प बताते हैं कुछ समय बाद ही उसमें भी खामियां नजर आने लगती हैं। जलवायु को नियंत्रित करने वाले जंगलों का स्थान कंक्रीट के जंगल लेते जा रहे हैं। इसमें कोई दो राय नहीं कि इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों व नई-नई खोजों ने हमारा जीवन आसान बनाया है पर उसके साइड इफेक्ट तेजी से असर दिखाने लगे हैं। रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग ने भूमि को उर्वर शक्ति को प्रभावित किया है। अत्यधिक जल दोहन से भूजल का स्तर साल दर साल नीचे जाता जा रहा है। भू क्षरण होने लगा है। भूमि तेजी से बंजर होती जा रही है।

खैर हालात हमारे सामने हैं। कृषि विज्ञानियों को ऐसी किस्में विकसित करनी होंगी जो बदलते मौसम के अनुकूल हों। शुष्क भूमि में खेती की किस्में खोजनी होंगी। इसी तरह से कम जल में विकसित होने वाली फसलों की किस्में पर ध्यान देना होगा। कंजरवेशन खेती को बढ़ावा देना होगा। परंपरागत खेती को चरणवद्ध तरीके से अपनाया जाएगा। प्रायः यह करना होगा कि जलवायु परिवर्तन के कारण हो रहे मौसम चक्र के बदलाव के अनुकूल फसलों की किस्में तैयार हों। कृषि और आर्थिक क्षेत्र के विशेषज्ञों का मानना है कि तापमान की असाधारण उतार-चढ़ाव के चलते कृषि पैदावार पर सीधा-सीधा नकारात्मक असर पड़ रहा है। कृषि उत्पादन प्रभावित हो रहा है। कृषि उत्पादों की गुणवत्ता प्रभावित हो रही है। इससे साफ हो जाता है कि खाद्य वस्तुओं के भाव बढ़ेंगे ही और उसका सीध असर हमें महंगाई के रूप में देखने को मिलेगा। मजे की बात यह है कि जलवायु परिवर्तन के कारण दुनिया के देशों में तेजी से बंजर होती भूमि को लेकर चिंता तो जलाई जा रही है पर अभी तक इन हालातों से निपटने का ठोस आधा तैयार नहीं किया जा सका है। आज दुनिया के देश आसन खाद्यान्न संकट को लेकर चिंतित है। इसके लिए बड़े-बड़े सम्मेलनों में चिंतन-मनन हो रहा है। विश्व खाद्य संगठन सहित दुनिया की संस्थाएँ इससे आसन संकट को लेकर तो परेशान है ही उनकी चिंता का कारण यह भी होता जा रहा है कि पोषक भोजन नहीं मिलने से करोड़ों लोग कुपोषण के शिकार हैं। खाद्यान्न का उत्पादन प्रभावित हो रहा है। गुणवत्ता प्रभावित हो रही है। दुनिया के देश खेती किसानों के महत्व को कोरना काल में अच्छी तरह से समझ चुके हैं। कोरना में मानवता को संभल देने में खेती किसानों ने प्रमुख भूमिका निभाई और सबकुछ बंद होने पर खेती किसानों ही लोगों का पेट भरने में सहायक रही।

जलवायु परिवर्तन का असर जब साफ-साफ सामने आने लगा है तो उस हालात में मौसम विज्ञानियों और कृषि विज्ञानियों के सामने बड़ी चुनौती आ गई है। एक ओर जलवायु परिवर्तन को सर्वाधिक प्रभावित करने वाले कारकों का कोई ना कोई विकल्प खोजना ही होगा। होता यह है कि हम जिसे आज बेहतर विकल्प बताते हैं कुछ समय बाद ही उसमें भी खामियां नजर आने लगती हैं। जलवायु को नियंत्रित करने वाले जंगलों का स्थान कंक्रीट के जंगल लेते जा रहे हैं। इसमें कोई दो राय नहीं कि इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों व नई-नई खोजों ने हमारा जीवन आसान बनाया है पर उसके साइड इफेक्ट तेजी से असर दिखाने लगे हैं। रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग ने भूमि को उर्वर शक्ति को प्रभावित किया है। अत्यधिक जल दोहन से भूजल का स्तर साल दर साल नीचे जाता जा रहा है। भू क्षरण होने लगा है। भूमि तेजी से बंजर होती जा रही है।



राशिफल गुरुवार 27 फरवरी, 2025

फाल्गुन मास, कृष्ण पक्ष, चतुर्दशी तिथि, गुरुवार, विक्रम संवत् 2081, धनिष्ठा नक्षत्र दिन 6:44 तक, शिव योग रात्रि 11:41 तक, शुकुनि करण प्रातः 8:55 तक, चन्द्रमा आज कुम्भ राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कुम्भ, चन्द्रमा-कुम्भ, मंगल-मिथुन, बुध-कुम्भ, गुरु-वृष, शुक-मीन, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज बुध मीन राशि में रात्रि 11:46 पर प्रवेश करेगा। आज पंचक, देवपितृकार्य अमावस्या, शिव खप्पर पूजा, मन्वादि है। आज अमावस्या तिथि का क्षय हुआ है। आज माघी मासम है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 8:25 तक, चर 11:14 से 12:40 तक, लाभ-अमृत 12:40 से 3:31 तक, शुभ 5:00 से सूर्यास्त तक।

राहुकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 6:57, सूर्यास्त 6:23

मेघ	सिंह	धनु
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटक हुआ धन प्राप्त हो सकता है।	परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में चल रही परेशानियां दूर होने लगेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।	व्यावसायिक कार्यों से संबंधित बातों सफल रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। अटक हुआ धन प्राप्त होगा।
वृष	कन्या	मकर
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बने लगेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।	विवाहित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होगा।	आर्थिक कारणों से अटक हुए कार्य बने लगेगी। अटक हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।
मिथुन	तुला	कुंभ
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा। अटक हुए कार्य बने लगेगी। व्यावसायिक यात्रा संभव है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।	परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। आवश्यक कार्यों के संबंध में लुब्धा बनी रहेगी। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।	मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक कार्य योजनानुसार बने लगेगी। पर-परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।
कर्क	वृश्चिक	मीन
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विचित्र हो सकता है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा।	घर-गृहस्थों में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।	घर-गृहस्थों के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। परिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आज मन में असंतोष बना रहेगा।

डीडवाना। दुनियाभर में भारत की पहचान गंगा जमुनी तहजीब की रही है। यहां सदियों से हिंदू-मुस्लिम सहित अनेक समुदाय साथ रहते आए हैं। यह भारत का साम्प्रदायिक सौहार्द ही है, जो सभी वर्गों और धर्मों को एकसूत्र में बांधे रखता है।

ऐसा ही साम्प्रदायिक सौहार्द और हिंदू-मुस्लिम एकता का नजारा आज डीडवाना में देखने को मिला, जब महाशिवरात्रि पर्व के मौके पर हिंदू-मुस्लिम समुदाय के लोग गले लगे और एक दूसरे का सम्मान किया। राजस्थान में डीडवाना की पहचान साम्प्रदायिक सौहार्द वाले शहर के रूप में रही है। डीडवाना शहर अपने आप में गंगा जमुनी तहजीब का एक बड़ा उदाहरण है, यहां दोनों सम्प्रदाय के लोग एक साथ धार्मिक परम्पराएं निभाकर दीपावली, होली, ईद एक साथ मनाते हैं। महाशिवरात्रि पर भी एक ऐसी अनूठी परम्परा निभाई जाती है, जो दोनों धर्मों के सौहार्द को एक



महाशिवरात्रि पर नाथ सम्प्रदाय के महंत के जुलूस का मुस्लिम इलाकों में स्वागत किया।

डोर में बांधती है। ऐसी ही गंगा जमुनी तहजीब का नजारा आज डीडवाना में फिर से दिखाई दिया। धार्मिक सौहार्द ऐसा की हर कोई एक दूसरे के प्रति सम्मान का भाव। मौका था महाशिवरात्रि का, इस मौके पर हर हर महादेव की गूंज के साथ साथ जोगामंडी धाम के प्रमुख पीर

- मुस्लिम समाज ने नाथ महंत का किया अभिनन्दन
- मुस्लिम समुदाय ने नाथजी को श्रीफल भेंट किया
- सदियों से हिन्दू-मुस्लिम समुदाय निभा रहे हैं पौराणिक परंपरा

कर उन्हें श्रीफल भेंट किया। डीडवाना में सदियों पूर्व साम्प्रदायिक सद्भावना की जो नींव हिंदू-मुस्लिम समुदायों के पूर्वजों ने डाली थी, जो आज भी बदस्तूर जारी है। दोनों समुदायों के लोग न केवल इस परम्परा का पौराणिक तरीके से अनुसरण कर रहे हैं, बल्कि देश व दुनिया को भी साम्प्रदायिक सद्भाव का संदेश दे रहे हैं। इस परम्परा के साथ एक खास बात और जुड़ी हुई है, जो सही मायने में साम्प्रदायिक सौहार्द की जड़ों को मजबूत करती है। नाथ सम्प्रदाय के इस जोगा मण्डी धाम में जब भी नाथ मठाधीश की नियुक्ति होती है, तब मुस्लिम

समाज उन्हें पगड़ी पहनाता है और माथुर समाज शांल ओढ़ाता है, तब जाकर नए महंत की नियुक्ति होती है। जब पूरे देश में साम्प्रदायिक सद्भाव के ताने बाने पर हमले हो रहे हैं, ऐसे दौर में आज भी भारत की गंगा जमुनी तहजीब जिंदा है, जो दुनिया को बताती है कि सभी भारतीय एक हैं, और उन नफरतों को भी खारिज करते हैं। यह सद्भाव उन लोगों को कराता जवाब है जो आज दिन समाज में नफरत फैलाते हैं। डीडवाना कि यह अनूठी परम्परा देश को तोड़ने वाली ताकतों मुंह पर कराता तमाचा है और मिसाल भी है।

राजस्थान अध्यापक पात्रता परीक्षा की तैयारी

भीलवाड़ा। राजस्थान अध्यापक पात्रता परीक्षा की तैयारी को अंतिम रूप दे दिया गया है। जिले में 51 केंद्रों पर 41,352 अभ्यर्थी परीक्षा देंगे। पहले दिन दो पारी में सुबह 10 से 12.30 व दूसरी पारी दोपहर 3 से 5.30 बजे तक परीक्षा होगी। दूसरे दिन एक पारी में सुबह 10 से 12.30 बजे तक परीक्षा होगी। एजाम को लेकर शहर सहित आट्ण, पालडी, आरजिया, अगरपुरा, पंसल, मांडल, सुवाणा के स्कूलों में भी सेंटर बनाये हैं।

खास बात यह है कि इस बार रीट परीक्षा के एडमिट कार्ड में क्यूआर कोड है। इसे स्कैन करते ही अभ्यर्थियों की सारी डिटेल्स मिल जायेगी। फर्जी अभ्यर्थी पर अंकुश लगाने के लिए पहली बार अभ्यर्थियों का फेस रिकग्निशन होगा। ऐसे में एडमिट कार्ड में अभ्यर्थी को ओर से लगाई गई फोटो का सेंटर पर लाइव फोटो से मिलान नहीं हुआ तो अभ्यर्थी को एंट्री नहीं दी जाएगी। इसके साथ ही अंगुठी का निशान भी लिया जाएगा। यही नहीं सभी सेंटर सीसीटीवी कैमरों से लैस है। पेपर, सेंटर

251 महाकुंभ कलश यात्रा निकाली

भीलवाड़ा। महाशिवरात्रि पर्व पर कोली समाज विकास ट्रस्ट भीलवाड़ा के तत्वाधान में आयोजित किए गए श्री बदलेश्वर महादेव मंदिर सप्तम पाठोत्सव एवं कुंभ कलश यात्रा एवं महिला जागृति सम्मेलन में मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए महामंडलेश्वर हंसराम उदासीन ने कहा कि सनातन धर्म ही धर्म ये विश्व में भारत की पहचान है बाकी पंथ धर्म सब सनातन से निकले हैं।

महामंडलेश्वर हंसराम कहा कि अब महिलाओं को आधुनिक युग में अपने हक अधिकारों के तकनीकी को सहयोगी बनाकर आगे बढ़ना चाहिए। महिलाओं को संतानों को अच्छे संस्कार देकर अच्छी परवरिश करनी चाहिए। कार्यक्रम में जवाहर फाउंडेशन के लोकेन्द्र सिंह ने बोलते हुए पण्डित डालचंद, रूपलाल भेरू लाल लोरवाडिया आदि ने हरिं झंडी दिखाकर रवाना किया। हरिं झंडी दिखाने से पूर्व टाकुर जी महाराज के बेवानों को श्री महावीर व्यायाम शाला अखाड़ा के पहलवान फतेह लाल फतेहपुरिया के सर धारण करवाया। साथ की संतो और पंचों ने महाकुंभ शगुन कलश को पार्षद प्रयाशी रही अंजना खेमचंद सुवाणिया के माथे पर धारण करवाया। महाकुंभ कलश यात्रा दादाबाडी शीतला माता मंदिर से कोली मोहल्ला पंचायत भवन, शहीद चौक, झलकारी बाई सर्किल, पेटोल पुर होते हुए बदलेश्वर महादेव मंदिर पहुंची जहां

पंडित रामचंद्र मंडिया द्वारा आरती करके कुंभ कलश धारण करने वाली महिलाओं ने प्रयागराज त्रिवेणी संगम जल से बदलेश्वर शिवलिंग का अभिषेक करवाया। कोषाध्यक्ष महेंद्र गंडावध के शहर अशोक आदिथियों का मारवाडी साफा बंधवाकर सम्मान किया गया। सचिव मुरलीधर लोरवाडिया ने बताया कि कार्यक्रम में भामाशाहों के सहयोग से वर्तमान प्रसाद की व्यवस्था की गई। समाज अध्यक्ष ओम प्रकाश सुनारिया कार्यक्रम में आगामी भादवा माह छठ को सौर वर्ष पुराने देवालय देव नारायण मंदिर पर कलश चढ़ाने और शिव परिवार स्थापित करने की घोषणा की है जिसमें देव नारायण मंदिर के 56 सालों से सेवा पूजा कर रहे सेवक राम लाल तलाया ने 2.51 लाख रूपये नकद देने की घोषणा की। कार्यक्रम में कोषाध्यक्ष महेंद्र मोती सिंह मंडिया डालचंद, देवीलाल, हरि नारायण, सुनील सोनु मीठीलाल शवाणिया, सोहन लाल राकेश धर्मराज बाबू लाल, सेवती, विशाल, मोहित, हेमलता लक्ष्मी नारायण केसरी मल मोहन लाल शवाणिया आदि समाज बंधु उपस्थित रहे।

माली सैनी समाज के सामूहिक विवाह सम्मेलन को लेकर गणेश स्थापना

परबतसर, (निस)। माली, सैनी समाज के द्वारा आगामी फुलेरिया दूज को आयोजित होने वाले सामूहिक विवाह सम्मेलन को लेकर उपरखंड क्षेत्र के ग्राम बडू में छह गांव परबतसर, मकराना, बिदियाद, बोरवाड, बडू, कालवा माली सैनी समाज सामूहिक विवाह समिति कि बैठक त्रिमूर्ति बालाजी मंदिर परिसर में अध्यक्ष सत्यनारायण सिंगोदिया की अध्यक्षता में आयोजित हुई। सिंगोदिया ने कहा कि समाज को एकजुट होकर ज्यादा से ज्यादा सामूहिक विवाह करवाने के लिए प्रचार प्रसार करने के लिए प्रेरित किया जावे और समाज में बढ रही कुकृतियों पर लगाम लगावे साथ ही आज के इस युग में आर्थिक स्थिति से सुदृढ़ रहने के लिए सामूहिक विवाह में अपने बालिक बालक बालिकाओं को ज्यादा से ज्यादा विवाह करवायें। इसी के साथ सामूहिक विवाह सम्मेलन में 19 जोड़ों का पंजीयन कर गणेश पूजन करवाया गया। साथ

विवाह में शामिल होने वाले सभी जोड़ों को एक एक आलमारी भेंट करने की घोषणा श्यामसुन्दर सोलंकी भकरी के द्वारा की गई। सामूहिक विवाह सम्मेलन में वर वधु को उपहार देने वालों ने फ्रीज विजय बनसटिया अजमेर अल ई डी - , नाथलाल, मेटल टूल्स जयपुर नवरतमल पुत्र कन्हैयालाल टाक लाइन्स, मनु मेटल टूल्स जयपुर, आलमारी श्याम सोलंकी भकरी, कूलर सुरेश गहलोत सरपंच, ओमप्रकाश गहलोत, पुखराज जी गहलोत बडू, सिलाई मशीन गोरधनराम सिंगोदिया बाग बेरा बडू, मिक्सी अर्जुन राम टोकमचंद शिवराम गहलोत पिपलिया बेरा बडू श्री रानाबाई कैटीन सूत निवासी बडू, छत पंखा सुगनाराम - नौरतमल मारोटिया भकरी (इमरती की ढाणी), गेस चूल्हाओमप्रकाश पुत्र रामकरण कच्छावा हरसौर, 2 कुर्सी सेट और एक फ्रेश बाबूलाल जी कैलाश जी दगदी गुलर, स्टील टंकी 20 पुखराज जी पुत्र शंकरलाल खारोलिया इंदौर, प्रत्येक जोड़े को डबल बैड ब्लैकटैन नसुख जी सैनी / स्वर्गीय छोटाराम सैनी निवासी नांवा शहर, पानी का टैकन 20 लिटर कस्तूरमल - महेंद्र सिंगोदिया गैडा कला, बाथरूम सेट विष्णु दत्त टाक परबतसर और डॉ. रामस्वरूप तुन्दवाल कालवा, गर्म खाने का टिफिन महेंद्र कुमार - अमित कुमार मारोटिया ग्वालियर वाले बिदियाद, मार्बल का चकला बेलन रामादेवी / स्व श्री रामबल्लभ उवाणा आकाशिया बेरा बिदियाद, दिवार घडी हीरालाल सोलंकी पालो जेठ मकराना, दिवार घडी भागचंद टाक बोरवाड, मार्बल घडी बाबूलाल जी उबना अश्याक बास बिदियाद, गर्म खाना का टिफिन गोविन्द राम गहलोत पिपलिया बेरा बडू, गर्म पानी की केतली ओमप्रकाश पुत्र लिखमराम सिंगोदीया नदी बेरा बडू सहित कई

लोगो ने बढचढकर वर वधु को दिल खोल कर उपहार दिया है। पदाधिकारियों को प्रचार सामग्री का वितरण किया। आयोजित समिति कि बैठक में संरक्षक टेकेदार सेवाम दगदी, राम प्रसाद तंवर महिला संरक्षक गीता सोलंकी परबतसर माली समाज अध्यक्ष सत्यनारायण मालाकार, मकराना अध्यक्ष श्रणलाल सोलंकी, बिदियाद अध्यक्ष कैलाशचंद तंवर, कालवा अध्यक्ष सुबेदर बागडी बडू अध्यक्ष नारायणराम गहलोत, बोरवाड उपाध्यक्ष प्रकाश सोनगरा, उपाध्यक्ष गणपतलाल सोलंकी, महासचिव मनोज सैनी, बडू सरपंच सुरेश माली, महिला मंडल महासचिव श्यामाराणी सिंगोदिया, एडवोकेट गणपतलाल टांक, भोमा राम सोलंकी भकरी समिति के प्रवक्ता नौरतमल सिंगोदिया समाज सेवी ओमप्रकाश सोलंकी बोरवाड सहित कई गांवों से आए सैकड़ों समाज के लोग उपस्थित रहे।

तत्कालेश्वर महादेव मंदिर से बाबा महाकाल नगर भ्रमण के लिए शाही लवाजमे के साथ निकले

केकड़ी (निस)। महाशिवरात्रि के अवसर पर बुधवार को शहर के पुरानी तहसील परिसर में तत्कालेश्वर महादेव मंदिर में विराजित बाबा महाकाल नगर भ्रमण के लिए अपने शाही लवाजमे के साथ निकले। इस मौके पर महाकाल सेवक समिति के द्वारा भव्य शाही सवारी निकाली गयी। शिवरात्रि के अवसर पर सुबह पूजा अर्चना के पश्चात 10.15 बजे बाबा महाकाल की मनमहेश प्रतिमा को पालकी में विराजित कर हाथों में पालकी उठाकर सेवक बाबा महाकाल को नगर भ्रमण के लिए लेकर निकले। शाही सवारी शहर के मार्गों से होकर गुजरी तो पूरा माहौल भक्तिमय हो गया तथा गुलाल अबीर व फूलों से सड़के सरोबर हो गयी। डेड किलोमीटर लम्बे शाही सवारी के लवाजमे के दौरान डीजे की धून पर बजते महाकाल के भजनों पर भक्तगण नाचते गाते हुए शिव भक्ति में लीन होकर चल रहे थे। शाही सवारी के आगे समिति के सेवक बाबा महाकाल की शाही सवारी निकाले जाने का उद्घोष

करते हुए तथा शंख, मजरा, दो ताशे बजाते हुए शाही सवारी में शामिल हुए। शाही सवारी के आखिर बाबा महाकाल की मनमहेश प्रतिमा को पालकी में विराजित कर सेवक अपने कंधे पर पालकी को लेकर चल रहे थे। इस दौरान शहर के प्रमुख मंदिरों के बाहर बाबा महाकाल की आरती की गई। घण्टाघर पर बाबा महाकाल की शाही सव